# समकालीन भारतीय साहित्य : विविध विमर्श

## विविध विधाओं के संदर्भ में

भाग –१


प्रधान संपादक

प्रो. सीताराम के. पवार

सह संपादक

प्रो. प्रभा भट्ट

डॉ. एल. पी. लमाणी

डॉ. शीला. चौगुले

डॉ. नीता दौलतकर


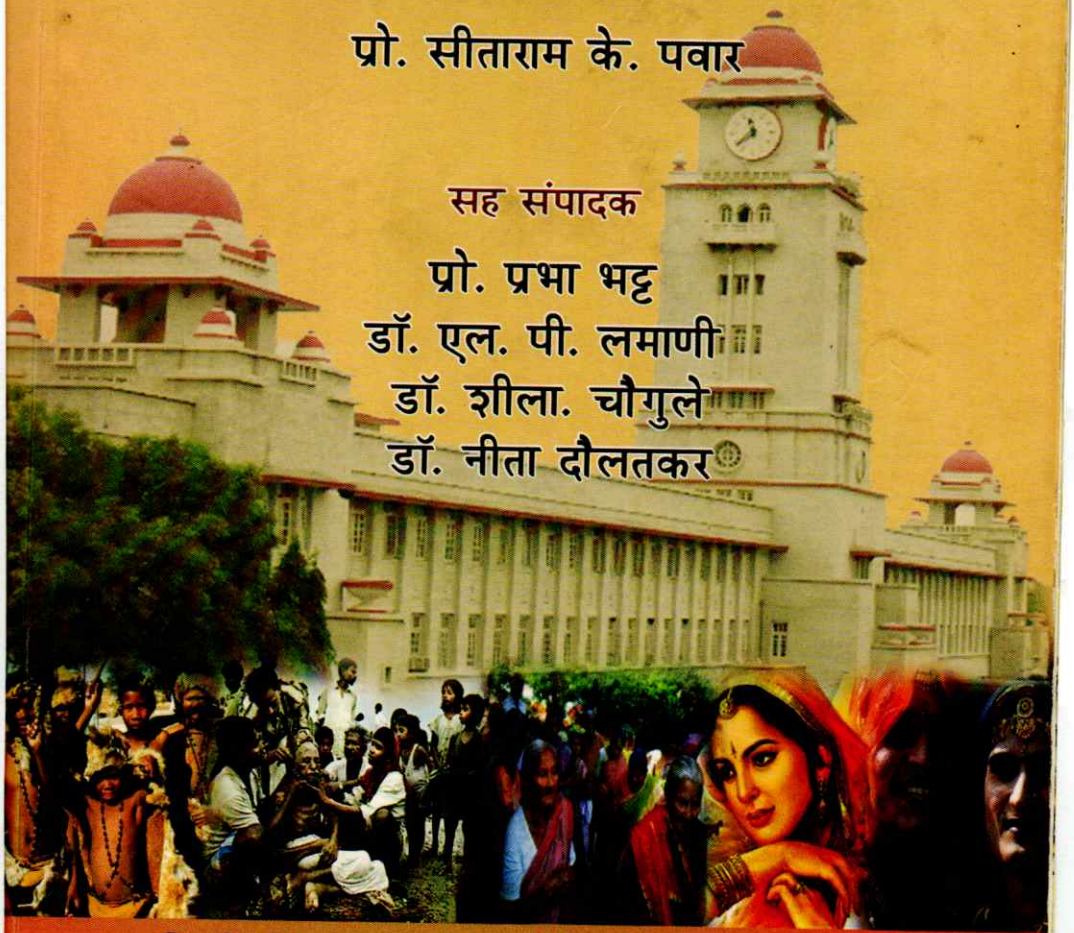


हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

| | | |
|---|---|---|
| 1 | Name of the Book | Samakalin Hindi Sahitya: Vividh Vimarsh |
| 2 | Editor | Prof. Sitaram K Pawar |
| 3 | Publisher | Aman Prakashan Kanpur, UP |
| 4 | Year of Publishing | 2018 |
| 5 | ISBN Number | 978-93-86604-74-3 |
| 6 | Chapter Title | Dr. Girish Karnad Ka Natak "Nagamandal" me Stree Vimarsh |
| 7 | Chapter Writer | Dr. Nazirunnisa S ISBN 978-93-86604-74-3 |
| | HEI: SJM College of Arts, Science and Commerce | |
| 8 | Page No, | 171 |

PRINCIPAL
S. J. M. Arts Science & Commerce College
Hlk. Road, CHITRADURGA.

S.J.M. COLLEGE CHITRADURGA Chandravalli

# समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध विमर्श

(Collective Essays Presented at International Conference on "Diverse Criticism in Contemporary Indian Literature)


| | |
|---|---|
| प्रधान संपादक | : प्रो. सीताराम के. पवार |
| © | : प्रधान संपादक |
| प्रकाशक | : अमन प्रकाशन कानपुर |
| मुद्रक | : सरस्वति प्रिंटर्स, धारवाड |
| वर्ष | : २०१८ |
| पृष्ट | : ६३१+१२ |
| ISBN | : **978-93-86604-74-3** |
| मूल्य | : ३०० |
| प्रतियाँ | : ३०० |


**सभी हक सुरक्षित है ।**

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार, आदि लेखक के हैं । अतः संपादक, संपादक मंडल, मुद्रक तथा प्रकाशन इसके लिए जिम्मेदार नहीं है ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| 50. | हिंदी उपन्यासों में आदिवासी विमर्ष | डॉ.सुरैय्या इसुफअल्ली शेख | 168 |
| 51. | डा. गिरीश कार्नाड का नाटक "नागमंडला" में स्त्री विमर्श | श्रीमती नाज़िरून्नीसा.एस | 171 |
| 52. | मोहनदास नैमिशराय रचित आज बाजार बंद है उपन्यास में नारी विमर्श | Javed | 174 |
| 53. | इक्कीसवीं सदी की लघुकथाओं में चित्रित कार्मिक विमर्श | वर्षाराणी जबडे, | 177 |
| 54. | "समकालीन हिंदी साहित्य : विविध विमर्ष" | प्रा.संजय नारायण पाटील | 181 |
| 55. | चित्रा मुद्गल के उपन्यास आवाँ में चित्रित नारी विमर्श | दावलमुन्नी किल्लेदार | 184 |
| 56. | किन्नर जीवन और हिन्दी कहानियाँ | डॉ० सैराबानु एम्. नवलगुंद | 187 |
| 57. | दलित विमर्श: स्त्रीवाद की संश्लिष्ट वैचारिकी | डॉ. प्रेमचन्द चव्हाण | 190 |
| 58. | समकालीन कविता में स्त्री विमर्श | डॉ. अभया गो. देवदास | 193 |
| 59. | समकालीन हिन्दी साहित्य विमर्शन | डा सत्यनारायण हेच्.क | 196 |
| 60. | प्रेमचंद की कहानी ठाकुर का कुआँ में दलित चेतना | डॉ0, एम सिध्दय्या | 199 |
| 61. | मैत्रेयी पुष्पा जी के साहित्य में स्त्री विमर्श | Prof.Vidya.S.Hiremath | 202 |
| 62. | नारी के परिवर्तित जीवन मूल्य–'मिलजूल', 'अंतर्वंषी', उपन्यास के संदर्भ में। | प्रा. मारूफ मुजावर | 205 |
| 63. | मंजुल भगत कृत 'अनारो' उपन्यास में नारी विमर्श | अमोल तुकाराम पाटील | 208 |
| 64. | 'अग्निबीज' में व्यक्त दलित चेतना | डॉ. निलांबिका पाटिल | 211 |
| 65. | निर्मल वर्मा के उपन्यास 'रात का रिपोर्टर' का नारी विमर्श | डॉ.एम.आर.रूपा | 214 |
| 66. | *महानगर का बदलता मनोविज्ञान और हिंदी कहानी* | *डॉ. कविता अजीतसिंह सुल्हयान,* | 217 |
| 67. | शिवानी का कहानी साहित्य – स्त्री विमर्श | डॉ. राखी. के. शाह, | 219 |
| 68. | "हिन्दी साहित्य के विविध आयामों में स्त्री विमर्श" | डॉ. राजीव. एस. हिरेमठ | 221 |
| 69. | राजी सेठ के उपन्यासों में नारी अस्मिता | डॉ.रश्मी अरस | 224 |
| 70. | समकालीन हिन्दी कहानीयों मे स्त्री पात्रों की मूल संवेदना | प्रा.राठोड राजकुमार थावरा | 227 |
| 71. | मधु काँकरिया कृत 'सलाम आखिरी' उपन्यास में नारी विमर्श | जयलक्ष्मी नायक | 330 |
| 72. | समकालीन हिन्दी के प्रमुख उपन्यासों में आदिवासी विमर्श | हनमंतप्प गुरप्प लमाणि | 333 |
| 73. | ''समकालीन हिंदी दलित उपन्यासों में दलित स्त्री '' | प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड | 337 |
| 74. | हिंदी दलित उपन्यासकारों के उपन्यासों | डॉ. श्रीकांत बि. संगम | 240 |

# डा. गिरीश कार्नाड का नाटक " नागमंडला" में स्त्री विमर्श

श्रीमती नाज़िरून्नीसा .एस

डा. गिरीश कार्नाड ने "नागमंडल" नाटक की रचना सन १९८८ में की । इनका जन्म १९ मई १९३८ माथेरान, महाराष्ट्र में हुआ । १९५८ में कर्नाटक विश्वविध्यालय से स्नातक उपाधि ली । इसके पश्चात् रोड्स स्कालर के रूप में इंग्लैंड गए । वही आक्सफोर्ड के लिकान तथा मागडेलन महाविद्यालयों से दर्शनशास्त्र, राजनीतिशास्त्र तथा अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की उपाधि पाप्त की । इन्होंने शिकागो विश्वविद्यालय के फुलब्राइट महाविद्यालय में विज़िटिंग प्रोफेसर भी रहे। वे कन्नड और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखिते हैं । सन १९९८ में ज्ञानपीठ सहित पद्मश्री, पद्मभूषण उपाधियाँ पाप्त हुई । इनके प्रमुख नाटक हैं– हयवदन, तुगलक, ययाति, नागमंडल आदि । वे फिल्म अभिनेता भी हैं ।

**स्त्री विमर्श का अर्थ :–** विमर्शा का शाब्दिक अर्थ है–सलाह या परामर्श । नारी विमर्श पश्चिमी देशों से आयातित एक संकल्पना (समान्य विचार) है । इंग्लैंड और अमेरिका में उन्नीसवीं शताब्दी में फेमिनिसट मूवमेंट से इसकी शुरूआत हुई । यह आन्दोलन लैंगिक समानता के साथ–साथ समाज में बराबरी के हक के लिए एक संघर्ष था, जो राजनीती से होते हुए साहित्य, कला एवं संस्कृति तक आ पहुँचा। बाद में यह आन्दोलन विश्व के कई देशों से होता हुआ भारत तक पहुँचा ।

**भूमिका :–** नागमंडल नाटक में मुख्यतः आनेवाले पात्र हैं– रानी, उसका पति अप्पण्णा, एक बूढी औरत जिसे कुरूडव्वा कहते हैं और उसका पुत्र कप्पण्णा और एक सर्प।

रानी का विवाह जब अप्पण्णा से होता है तो रानी रो–धो कर अपने पिता के घर से बिदा होती है और नए सपनों को अपनी आँखों में भरकर पती के साथ आती है । पर वहाँ जाने के बाद परिस्थितियाँ बिल्कुल विपरीत थीं । उसके पती का किसी दूसरी औरत के साथ अनैतिक संबंध थे । अप्पण्णा उसे अकेली घर पर छोडकर, दरवाजे पर ताला लगाकर चला जाता है। फिर सुबह आना स्नान करना, भोजन करना फिर रानी को अकेले घर पर छोडकर बाहर से ताला लगाकर चला जाना । जाते समय यह आदेश देकर जाना कि कल आऊँगा, खाना तैयार रखना। यह अप्पण्णा का अभ्यास बन चुका था पर रानी यह सबकुछ चुपचाप सहती रहती है और जब बहुत दुःखी होती है तो अपने माँ–बाप को याद करके रोने लगती है।